

कलम दिखता है वहां तक ही न रुके...
लेकिन जो देखना है वहां तक बढ़ायें

मीडियाकर्मी एक ऐसा प्रबुद्ध वर्ग है जो जिन्दगी की दशा और दिशा तय करता है। हमारी रचना आम मनुष्य के लिए भोजन की तरह है। हमारे हर शब्द में एक वायब्रेशन है जो हरेक पाठक तक पहुंचता है। शब्दों के पीछे हमारा इंटेंशन, भाव भी उनके दिलों को छूता है। इसीलिए हम कैसा समाज चाहते हैं, समाज को हम कैसा देखना चाहते हैं, ये हमारी रचना पर निर्भर है। इसलिए रचना रचने वाला मानसिक व शारीरिक दोनों रूप से संतुलित व स्वस्थ होना ज़रूरी है। तभी हम समाज को वैसा ही बना पायेंगे।

पहले की पत्रकारिता जीवन से जुड़ी हुई पत्रकारिता थी। यानी कि जीवन ही प्रोफेशन था। किसने लिखा है, किसने कहा है, उस आधार से प्रोफेशन था। जैसे कि लोकमान्य तिलक, लाला लाजपत राय, महात्मा गांधी, ये सब उसी का उदाहरण है। जैसे गांधी बोलते ही हम अहिंसा से जुड़ जाते हैं, मदर टेरेसा कहते ही हमें दया और करुणा याद आ जाती है और शिवाजी का नाम लेते ही शौर्य के वायब्रेशन आते हैं। माना कि उनका जीवन ही पर्याय था। कहने का भाव यह है कि प्रोफेशन में पर्सनैलिटी की झलक दिखाई दी। और उससे आम मनुष्य को उसी तरह जीवन बनाने का जज़्बा पैदा होता था, हिम्मत पैदा होती थी। और वो भी वैसा ही करने लगता जैसे सकारात्मकता के बीज उसमें पड़ते।

आज समय की मांग है कि पर्सनैलिटी ही प्रोफेशन बने। आज एक पत्रकार की जीवनचर्या को देखें तो वो सुबह से शाम तक दौड़ता-भागता, इन्फॉर्मेशन कलेक्ट करने में ही थक जाता है। परिणामस्वरूप रात देर तक अपने कार्य को निपटाने में ही उसका जीवन बीतता है। देर से सोना, देर से जगना, ये उनके जीवन का हिस्सा बन गया है। इसके चलते आज व्यवस्था भी वैसी ही बन गई है। बनाई भी तो हमने ही है ना! अगर हम उसको परिवर्तित करना चाहते हैं तो पहल भी हमें ही करनी होगी।

हम बात करना चाहते हैं कि सकारात्मक परिवर्तन के लिए सकारात्मक मीडिया होना ज़रूरी है। हम सोचते तो हैं कि सकारात्मक होना चाहिए लेकिन उसका आरंभ कौन और कैसे करे, ये भी प्रश्न हमारे सामने आता है। आज हम जबकि सारे समाज और देश को सोच व दिशा देने वाले हैं तो बीड़ा हमें ही उठाना पड़ेगा। हम कैसा समाज देखना चाहते हैं, इसपर हमारा फोकस हो। न कि जो दिखता है उसपर। हम सुबह से शाम तक जो दिखता है हमारे आस-पास, उसे ही हम प्रकाशित करते हैं। पर हम समाज को वैसा देखना चाहते हैं, उस तरफ हमारा ध्यान बहुत कम है। होना उल्टा चाहिए ना! सशक्त मीडियाकर्मी के लिए सबसे पहले मीडिया धारक को स्वयं को सशक्त होना पहली शर्त है। अगर हम पंद्रह, बीस, पचास साल पीछे के इतिहास के पन्नों को देखें तो हमारे पूर्वज सुबह जल्दी उठते थे और शाम को जल्दी सोते थे। और वहां शांति और सुख दोनों ही ज़्यादा थे आज की तुलना में। किंतु आज हमारे पास साधन सुविधाएं तो बढ़ी लेकिन शांति छिन गई। दुनिया की दूरी तो कम हुई लेकिन दिल की दूरियां बढ़ गईं। इसे हमें ठीक करना है।

इसके लिए सबसे अच्छा समय ब्रह्ममुहूर्त को माना गया है। ब्रह्ममुहूर्त में सारी रुकावटें, सारे मन-मस्तिष्क शांत मुद्रा में होते हैं, न कोई कर्म की खींच है और न कोई शोर। ऐसे समय में हमारा ब्रह्माण्ड की ऊर्जा के साथ जुड़ना बहुत सहज होता है। हम उस परमस्रोत परमात्मा के साथ जुड़ते हैं और अपने को सकारात्मक ऊर्जा से भर लेते हैं। फिर इसका हम अपने प्रोफेशन में उपयोग व प्रयोग करें।

जिससे हमारी कलम से वो रचना होगी जैसे हम समाज को बनाना चाहते हैं, देखना चाहते हैं। हम सब चाहते हैं कि समाज में खुशहाली हो, हर चेहरे पर मुस्कान हो, उसके लिए सकारात्मक ऊर्जा हर शब्द में हो। और वो वायब्रेशन हमारी हर एक रचना से आनी चाहिए। तभी तो हम सुस्वस्थ और श्रेष्ठ समाज का निर्माण कर सकेंगे और आने वाली पीढ़ी को एक सही दिशा देने में कामयाब होंगे।

सदा चुस्त रहने के लिए उमंग और उल्लास के दो पंख साथ रखो



राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

कईयों के पास सूक्ष्म में माया आती है, संकल्प, विकल्प बहुत आते हैं। माया के आने का कारण है बाबा से प्रीत में कमी। जब हमारा नया जन्म, नया बाप, नई माँ, नई पढ़ाई, नया ऑक्यूपेशन सब नया-नया है- फिर हम यह क्यों कहते हैं कि पुराना संस्कार है! क्यों पुराने को मारा नहीं है क्या? पुराना माना साँप, साँप को जिन्दा रखेंगे तो फूँक तो मारेगा ही। हमें पुराना क्यों सोचना चाहिए, क्या करें - यह मेरा पुराना स्वभाव है ना! हमने कभी ब्रह्मा बाबा के मुख से यह शब्द नहीं सुने जो बाबा कहे मेरा पुराना

संस्कार है। हमने कभी नहीं देखा कि बाबा में कोई पुराना संस्कार है। रात-दिन बाबा के संग रहे, पुराना स्वभाव-संस्कार-संकल्प क्या होता, यह कभी हमने नहीं देखा, इसीलिए आज पहले हम सब इस बात का संकल्प करें कि पुराना संस्कार मर गया। हमारा संस्कार नये ब्राह्मण जन्म का है।

सवरे उठते हैं तो उठते ही बाबा सामने आता है या पुराना संस्कार सामने आता है? पिछले जन्म को मार कर उसका श्वास भी निकाल दो। पुराना संस्कार कहते हो माना अभी तक श्वास रखकर पालना करते हो, साँप को दूध देते हो कि हे साँप तू दूध पी और फूँक मार। क्यों कहें पुराना संस्कार है, जन्म नया, परिवार नया, पढ़ाई नयी, हमें जाना नयी दुनिया में है, सेवा हमारी नयी, फिर हम पुराना-पुराना क्यों पालकर बैठे हैं? पुराने संस्कार को मारें, तब ब्राह्मण जन्म का सुख ले सकेंगे।

कई चलते-चलते थक जाते हैं लेकिन हमारा बाबा कभी थकता है? तो हम भी बाबा जैसे अथक क्यों नहीं

बनते हैं! इसके लिए टाइम पर सोओ, टाइम पर उठो तो थकावट की बात ही नहीं। लेकिन थकावट तब होती है जब दिलशिकस्त होते हो, अलबेले होते हो। तो न हमें अलबेला होना है, न सुस्त होना है। सदा चुस्त रहने के लिए उमंग और उल्लास के दो पंख साथ रखो।

ना! ऐसे ही यहाँ से सुनो, यहाँ से ही निकाल दो। यहाँ की बात फालतू यहाँ तक भी क्यों घुमायें। उसे निकालने के लिए क्यों टाइम वेस्ट करें, यह भी रॉन्ग है।

हमारे लिए ऐसी कोई घड़ी न आवे जो हैरानी महसूस हो। मैं आज हैरान हूँ, परेशान हूँ, अब इस भाषा को समाप्त कर दो। न ऐसी कोई बात सुनो, न हैरान हो। किसी की फालतू बातें न सुनो, न उसका चिंतन करो। हाँ, किसी का मन भरा हुआ है तो जिसकी ड्यूटी है उसके पास जाकर सुनाके मन को हल्का करो। परन्तु ऐसे नहीं कि आपने दिल हल्की की

कभी कोई उल्टा कुछ कहता भी है तो एक कान से सुनो, दूसरे से निकाल दो। लेकिन दादी कहती एक कान से सुनकर दूसरे से नहीं निकालो, नहीं तो वह अन्दर घूमकर फिर बाहर निकलेगा इसलिए अच्छा यही है कि यहाँ से ही सुनो, यहाँ से ही निकाल दो।



अपनी मौज-मस्ती में रहो। कभी कोई उल्टा कुछ कहता भी है तो एक कान से सुनो, दूसरे से निकाल दो। लेकिन दादी कहती एक कान से सुनकर दूसरे से नहीं निकालो, नहीं तो वह अन्दर घूमकर फिर बाहर निकलेगा इसलिए अच्छा यही है कि यहाँ से ही सुनो, यहाँ से ही निकाल दो। जैसे इस कान में पानी पड़ा है तो यहाँ से ही निकालेंगे

और मैंने वह बात सुनकर दिल भारी कर ली। नॉट एलाऊ, इसलिए हमें न भारी होना है, न किसी को भारी करना है। न कभी मन को भारी रखना है। बात आई सेकण्ड में समाप्त हुई। इसी को कहा है ड्रामा की बिन्दी लगाना सीखो - इसकी विधि है ड्रामा, बिन्दू। बातें आयेगी परन्तु आयी, गयी। अभी इन सभी बातों से हमें मुक्त होना है।

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

बाबा प्रश्न पूछता है, मेरे बच्चे आप खुश रहते हो? दूसरा प्रश्न यह होता- सदा खुश हो या कभी-कभी, थोड़ा-थोड़ा खुशी होती है? बाबा कहते भगवान के बच्चे वो सदा खुश नहीं रहेंगे तो कौन रहेंगे? क्या है कि कभी-कभी बाबा-बाबा शब्द बोलते भी थोड़ा हल्का हो जाता है। बाबा भगवान हैं, उसके हम बच्चे हैं। अगर भगवान के रूप में बाबा की स्मृति सदा रहे तो खुशी न



अकेला करेगी लेकिन मुझे अकेला होना नहीं है। सदा बाबा के साथ कम्बाइण्ड रहना है, हम कहें बाबा मेरे साथ है, तो साथ वाला थोड़ा किनारा भी हो सकता है लेकिन कम्बाइण्ड तो सदा ही साथ है। तो बाबा का वायदा अगर आपने दिल से याद किया, मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा तो हज़ूर हाज़िर है। लेकिन एक बाबा के संकल्प के बिना और कोई संकल्प नहीं आवे तब बाबा मेरा है। हम कहते हैं भगवान मेरा है, जहाँ

कम्बाइण्ड स्वरूप को यूज़ करो तो सदा विजयी बन जायेंगे

रहे, यह हो ही नहीं सकता क्योंकि इस ब्राह्मण जीवन में खुशी अविनाशी ज़रूरी है क्योंकि अविनाशी बाबा की देन है।

बाबा सर्वशक्तिवान है, हम कभी-कभी किसी भी शक्ति में मानो कमज़ोर हो जाते हैं, तो हम सोचते हैं हमारे से यह समस्या हल होना बहुत मुश्किल है। कभी-कभी अलबेले भी हो जाते हैं और कभी-कभी दिलशिकस्त भी हो जाते हैं। तो बाबा कहते हैं आप में कोई भी शक्ति की कमी है लेकिन मैं जो कम्बाइण्ड हूँ वो तो सर्वशक्तिवान हूँ ना। समय पर सहयोग, वरदान और मदद देने के लिए बाबा कम्बाइण्ड है। तो जो कम्बाइण्ड सर्वशक्तिवान बाबा है, उसकी मदद क्यों नहीं लेते? उस समय क्यों नहीं बाबा को याद करते? और बाबा आया ही है- हिम्मत की मदद देने के लिए, एक कदम आपके हिम्मत का और हज़ार कदम बाबा की मदद के हैं क्योंकि बाबा सर्वशक्तिवान है लेकिन होता क्या है? माया भी बहुत होशियार है, उसी समय हमको अकेला कर देती है। बाबा को भुला देती है और अकेले होने के कारण विजय होने के बजाय कहीं-कहाँ हार हो जाती है। तो ध्यान पर रहे कि माया पहले

भगवान है वहाँ विजय तो है ही। एक बाबा ही भगवान है और वो हमें मिल गया, इसी निश्चय के खुशी और मस्ती में रहना चाहिए क्योंकि भगवान ने जो कहा वो तो होना ही है।

अभी तो ज्यादा मेहनत करने की ज़रूरत नहीं है, अभी तो ज्ञान इतना स्पष्ट हो गया है और बाबा एक ही शब्द कहता है जो ब्रह्मा बाबा ने किया उसको फॉलो करो। दिनचर्या का भी बता दिया कि सुबह को कितने बजे बैठो, कैसे बैठो तो उसी विधि से बैठना है। फिर मुरली भी ऐसे सुनना है जो अर्जुन समान गीता ज्ञान सुनते-सुनते जैसे कि मन्त्र-मुग्ध स्थिति हो जाये। बाबा मेरे लिए आया है और मुरली द्वारा मेरे से बात कर रहा है, मेरे को पढ़ा रहा है, जैसे मेरा बाबा है, वैसे मेरा टीचर है, मेरे लिए आया है यह नशा होना चाहिए। फिर सिर्फ कर्मकर्ता नहीं, कर्मयोगी बन करके कर्म करो। कर्म और योग दोनों साथ-साथ हों। कर्म में परमात्मा पिता की याद होने के कारण जो भी कर्म करेंगे उसमें सफलता हुई पड़ी है क्योंकि जैसी स्मृति वैसी स्थिति होती है, जैसी स्थिति वैसे कर्म होते हैं।

बच्चे को पहले माँ-बाप का प्यार मिलता है फिर जब बड़ा होता है तो दुआयें मिलती हैं। बाप के प्यार ने बच्चे को दुआयें लेने के पात्र बनाया। फिर ज्ञान सागर के रूप में पढ़ाया- "हू एम आई"। जब तक किसी को आत्मा की फीलिंग नहीं आई, तब तक जैसे उसका जन्म ही नहीं हुआ। परमात्मा कह रहा है तुम



राजयोगिनी दादी जानकी जी

आत्मा हो, तो शरीर से डिटैच हो जाते हैं क्योंकि वह पुर्नजन्म से न्यारा है तो उसके कहने में ताकत है। जो देह के सम्बन्ध से न्यारा है वह मेरे से बात करता है, दृष्टि देता है, घर की याद दिलाता है। मैं भगवान के सामने हूँ, यह सोचते ही खुशी आ जाती है। यह दुनिया पुरानी, पराई, छी-छी है। मैं आत्मा बाबा की हूँ तो अनेक जन्मों के

विकारी संस्कार खत्म हो गये। अभी तक पुराने विकारी संस्कार छोटे-मोटे तूफान ले आते हैं, रूठने का भी संस्कार है। शक्ल चेंज हो जाती है। भाग्यवान कभी रूठता नहीं है। वह बाप को देखता है तो नशा चढ़ता है। उल्टे नशे वाला रूठता है। मैंने ये सेवा की, मैंने यह किया, कोई पूछता नहीं है। फिर खाना भी अच्छा नहीं लगता, नींद भी अच्छी नहीं आती है। सुल्टा नशा, नारायण बनने का नशा, लक्ष्मीपति, प्रकृति का पति यह नशा रहता तो वह लक्षण आयेंगे। ईश्वर की सन्तान हूँ, वर्से में भगवान के गुण आते जायेंगे। भगवान भी खुश होकर बच्चे को वर्से में सब गुण दे देता है।

भगवान ने इतना सबकुछ दिया है तो कितनी खुशी मेरे पास है! खुशी की खुराक खाओ तो चिन्ता करने का मर्ज छूट जाये। चिन्ता वाले को नींद भी ठीक से नहीं आती है। जिनके संग में रहते हैं, उनके संग का भी फायदा नहीं ले पाते हैं। कहेंगे मेरा कोई भी नहीं है। अरे खुशी में रहना है, अकेले हूँ तो भी खुश हूँ, सबके साथ हूँ तो भी खुश हूँ। वो खुश रहने वाला मजबूत बन जाता है। हमें बाबा का सच्चा, पक्का बच्चा बनना है। कोई भी परीक्षा आये, हम पक्के रहें।

याद को सहज बना दो, थक मत जाओ। थकने से याद नहीं ठहरती। एक

स्वयं को इन तीन बीमारियों से बचायें...

है थकने की बीमारी, दूसरी है चिन्ता की बीमारी, तीसरी है रूठने की बीमारी। सब बीमारियों की दवा एक है- बाबा की याद। याद में रहने से बीमारी भाग जाती है। यात्रा पर भावना से जाते हैं तो थकते नहीं हैं, उनको पक्का है अन्त तक पहुंचना है, वापस नहीं जाना है। भले पतले हो जायेंगे, बीमार हो जायेंगे, पर वापस नहीं जाना है। यहाँ भी जो वापस पुरानी दुनिया को देखते या पीछे मुड़कर देखते हैं तो थकते हैं, फिर सांस चढ़ता है, फिर हिम्मत हार खिला देती है। विजयी माला में आने वाला अच्छी सेवा करता, अच्छा पुरुषार्थ करता। वह कभी किसी की कम्प्लेन नहीं करता है, उसकी भी कोई कम्प्लेन नहीं करता है। अशरीरी बनने का अभ्यास, बाबा के प्यार की शक्ति और घर की याद तीनों इकट्ठी चाहिए। सेकण्ड में डिटैच हो जाओ।

बाबा खुद कहता है मंजिल ऊंची है, टाइम लगता है। फिर बाबा कहता बच्ची सेकण्ड लगता है। माया टच करती है सेकण्ड में, टच किया बस मुरझा गये। माया को सेकण्ड लगे और मुझे बाबा का बनकर मुस्कुराने में सेकण्ड न लगे! माया के पास पूरा प्लैन है हमको हार खिलाने का। बाबा हमको प्रैक्टिस कराता जीत पहनाने की। हम पहले से रेडी हैं, अस्त्र-शस्त्र तैयार हैं। अन्दर ही अन्दर अपनी घोट तो नशा चढ़े।